पाठ 12. सोने का फूल

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में अंतर-वैयक्तिक संबंध का कौशल विकसित करना है ताकि वे विभिन्न व्यक्तियों व प्राणियों से सकारात्मक तरीके से जुड़ने की समझ पैदा कर सकें। इस पाठ में परोपकार की भावना को उभारा गया है तथा बताया गया है कि लालच का फल दुखदायी होता है।

पाठ का सार

एक साधु बाबा अपने शिष्य के साथ कुटिया में रहते थे। वे भिक्षा माँगकर अपना जीवनयापन करते थे। एक दिन साधु बाबा के सपने में वन-देवता ने आकर बताया कि कुटिया के बाहर उन्होंने एक पौधा लगाया है जिसपर हर रोज़ सोने का एक फूल खिलेगा। उन्होंने साधु बाबा से प्रतिदिन उस पौधे से फूल तोड़कर बेचने तथा गरीबों को भरपेट भोजन खिलाने की बात कही। साधु बाबा ऐसा ही करने लगे। एक बार किसी काम से वे बाहर गए थे तब उनके शिष्य की नीयत बिगड़ गई। अगले रोज़ सोने का फूल नहीं खिला। साधु बाबा वापस आए तो शिष्य को अपनी गलती का अहसास हुआ। अगले दिन से फिर फूल खिलने लगा तथा गरीबों को भोजन मिलने लगा।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  कहानी सुनाते और पढ़ाते समय प्राचीन काल में गुरु-शिष्य परंपरा के बारे में सरल शब्दों में बताएँ। लोभ-लालच करना बुरी बात है, यह संदेश दें। साधु बाबा ने अपने शिष्य को क्षमा कर दिया, इसके कारणों के बारे में बातचीत करें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 23** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य व्याकरण एवं रचना पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - **एक** और **अनेक** का बोध कराने वाले शब्द-रूपों के बारे में पहले भी बताया जा चुका है। इस अभ्यास में अकारांत शब्दों के पुल्लिंग रूप से संबंधित प्रश्न पूछा गया है। दिए गए उदाहरण की ओर उनका ध्यान आकृष्ट करें।
  - काम वाले शब्दों से बच्चे परिचित हैं। वाक्य में उनका रूप किस प्रकार बदलता है, इसकी ओर इशारा करें।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - इस क्रियाकलाप का उद्देश्य फूलों और उनके रंगों की पहचान करना है। इससे बच्चों की अवलोकन क्षमता का विकास होगा।